श्रीकृष्ण ने मुरली की तान छेडी। जिस कोई गोपी ने मुरली की धुनी सुनी उसका चित्त श्रीकृष्ण ने उस मुरली की धुनी से चुराया। गोपियाँ भागी। ये हमारा मन कौन ले जा रहा है? उसी तरफ भागी जिस तरफ उनका मन जा रहा था - श्रीकृष्ण की ओर।

ऐसा नही हुआ कि किसी गोपी दूसरी से कहा - अरी! चल। रास होने जा रहा है। बस सब गोपियाँ समाधि की अवस्था में पहुच गयी। किसी को किसी का होश नही रहा। कुछ गोपिया तो जैसी थी, जो पहनी थी, जिस अवस्था में थी वैसीही निकल पडी।

कुछ अन्य गोपियों ने सोचा ऐसी ही निकल पडेंगे तो लोग क्या सोचेंगे? इसलिए उन्होने अपने आभुषण आदि ठीक कर जाने की सोचा। इनके मन में लोगों के बारे में विचार आया। इनकी समाधि कुछ निम्न कक्षा की थी। गोपियों की समाधी में कई स्तर थे। हर गोपी अपनी अपनी समाधि की अवस्था में निकल पडी। कुछ गोपियों के पतियों ने रोका तो उन गोपिया अपने शरीर से बाहर आकर चल पडी। मायाबद्ध जीव कर्म बंधन होने के कारण अपने शरीर से मनचाहे तरीके से शरीर के अंदर बाहर नही आ जा सकते। भगवत् प्राप्ती के बाद जीव सब बंधनों से मुक्त हो जाता है। इसलिए स्वच्छंद बनकर जब चाहे जहा विहार कर सकता है।

जिन गोपियोंने श्रृंगार करना चाहा वे भी ठीक तरीके से नही कर पायी क्योंकि उनका मन श्रीकृष्ण के विचारों में तल्लीन था। उन्होंने गहने आदि गलत स्थानों में पहन लिया। नाक में कुंडल, कलाई में हार, माथे पर बिंदी की जगह काजल - इसी तरीके का अजब श्रृंगार हो गया।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

खैर सब गोपियाँ जंगल में रात के रास के स्थान पर पहुँच गयी।